बिछड़ रहे हैं दोस्त हमारे

पिछले चार सौ साल में कई प्राणी हमेशा के लिए खो गए हैं। वे अब चित्रों में ही बाकी रह गए हैं।

बैजी रिवर डॉल्फिन

कहां मिलती थी - चीन

चायनीज रिवर डॉल्फिन या वाइटफिन डॉल्फिन हालिया विलुप्त प्राणियों में सबसे ऊपर है। यह 2006 में विलुप्त घोषित की गई। आखिरी बैजी की मृत्यु 2002 में हुई।

कैस्पियन टाइगर

कहां मिलते थे - तुर्की, ईरान और मध्य एशिया

यह साइबेरियाई और बंगाल टाइगर्स से आकार में छोटा होता था, पर रूस के साइबेरियाई या एमुर टाइगर्स से कुछ-कुछ मिलता था। 1970 आते- आते तक धरती पर एक भी कैस्पियन टाइगर नहीं बचा।

जांजीबार तेंदुआ

कहां मिलता था-तंजानिया के जांजीबार द्वीप

ये 1996 में विलुप्त घोषित कर दिए गए। इनकी विलुप्ति का मुख्य कारण भोजन की कमी और जंगलों का घटता दायरा रही।

डोडो

कहां मिलता था- मॉरिशस

डोडो ऐसा पक्षी था, जो उड़ नहीं पाता था। यह फल खाता था। इस पक्षी का मांस खाने में स्वादिष्ट नहीं होता था, इसलिए इसका शिकार नहीं किया जाता था। तब यूरोपियन्स ने सुअरों को पालना शुरू किया था। ये सुअर, डोडो के हिस्से का भोजन खा जाते थे। पर्याप्त भोजन न मिलने पर संख्या घटने लगी और आखिरकार 1681 में डोडो विलुप्त हो गए।

स्टेलर समुद्री गाय

कहां मिलती थी- प्रशांत महासागर

यह शाकाहारी स्तनधारी जीव थी। इसकी लम्बाई करीब तीस फुट थी और बाकी शरीर की तुलना में सिर काफी छोटा था। इसका शिकार करना काफी आसान था और इसी वजह से ही यह प्राणी विलुप्त भी हुआ। इसे 1768 में विलुप्त घोषित कर दिया गया।

एलिफैंट बर्ड यानी हाथी पक्षी

कहां मिलता थामेडागास्कर

इस पक्षी का वजन 500 किलोग्राम होता और लम्बाई दस फीट। बहुत ज्यादा शिकार और आवास के विनाश की वजह से यह प्रजाति भी सत्रहवीं शताब्दी आते-आते पूरी तरह खत्म हो गई। इसके अंडे का वजन लगभग नौ किलो होता था।

कितने दिलचस्प थे न ये सभी प्राणी। पर अफसोस है कि हम इन्हें कभी देख नहीं पाएंगे। इनमें से कई ऐसे प्राणी हैं, जिन्हें हमारे दादा-पापा की उम्र के लोगों ने देखा होगा, पर हम नहीं देख पाएंगे।

आवास और आहार की कमी ही इनके विलुप्त होने की मुख्य वजह रही। इसके अलावा इनका ज्यादा शिकार भी एक अहम वजह रहा।

दुख की बात है कि प्राणियों के विलुप्त होने का सिलसिला अब भी जारी है। बहुत सारे जीव-जन्तु अब इक्का-दुक्का ही बचे हैं। आइए, जानते हैं कि इन्हें बचाने के लिए हम क्या कर सकते हैं।

आपकी जिम्मेदारी

सबसे पहले तो जन्तु-जगत को सद्भाव पूर्ण दृष्टि से देखने की आवश्कता है। कई बार आपमें से कई दोस्त जानवरों से खेलने के बजाय उन्हें तकलीफ पहुंचाते हैं। पिंजरे मे कैद जानवर को लकड़ी से कोंचने या फिर उसे पत्थर मारने जैसी हरकत न करें, क्योंकि कोई आपके साथ ऐसा करें तो अच्छा नहीं लगेगा न आपको।

अपने घर के आस-पास मिलने वाले प्राणियां के बारे में जानकारी जुटाएं। इस स्थान पर इनकी क्या स्थिति है। कहीं वे संकटग्रस्त तो नहीं हैं। यदि वे संकट ग्रस्त प्राणियों में आते हैं, तो फिर उन्हें बचाने के लिए कोशिश कीजिए। किसी ग़ैर सरकारी संस्थान से संपर्क कीजिए। कुछ पैसे जुटाइए या फिर आप खुद भी एक छोटी कैंपेनिंग कर सकते हैं। इससे लोगों को जागरूक करने की कोशिश कीजिए। जो जीव आपके आसपास पाए जाते हैं, उनका जीव-चक्र में क्या योगदान है, पर्यावरण के लिए वे कितने महत्वपूर्ण हैं, इसके बारे में भी जानकारी जुटाएं।

मिलेगा संतोष

यह सब करने से आपको संतोष मिलेगा। ऐसा महसूस होगा कि आप कुछ जिम्मेदार हो गए हैं। आपकी इस पहल से हो सकता है कि और भी लोग आगे आएं। लोगों के आगे आने से कुछ ऐसी संकटग्रस्त प्रजातियां जिनका अस्तित्व खतरे में हो, उनका संरक्षण किया जा सकेगा।

अंतर ढूंढो

यहां आपको एक जैसी दो तस्वीरें दिखाई दे रही हैं। पहली बार देखने में तो आपको अंतर समझ में नहीं आएगा, लेकिन जरा गौर से देखने पर आपको सात अंतर दिखाई देंगे। खोज निकालिए वे अंतर...

बूझो तो जानें

1. हैरी पॉटर सीरीज की अंतिम फिल्म का नाम बताइए।
2. रफेल नडाल की नंबर वन टेनिस प्लेयर के रूप में बादशाहत किसने खत्म की?
3. राइट टू सर्विस एक्ट लागू करने वाला पहला भारतीय राज्य कौन-सा है?
4. समोआ देश किस महाद्वीप पर स्थित है?
5. फीफा के अध्यक्ष का नाम क्या है?
6. हिना रब्बानी किस देश की पहली महिला विदेश मंत्री है?
7. टोक्यो से पहले जापान की राजधानी क्या थी?
8. राष्ट्रीय पर्यटन दिवस कब मनाया जाता है?
9. हुमायूं की पत्नी का नाम क्या था?
10. पहला विश्व हिन्दी सम्मेलन कहां हुआ था?
11. हांगकांग कितने द्वीपों पर बसा है?
12. 'वी अंडरस्टैंड योर वर्ल्ड' किस बैंक की पंच लाइन है?
13. केंद्रीय एगमार्क प्रयोगशाला कहां है?
14. भारतीय सेना के कितने अधिकारियों को मार्शल की उपाधि दी गई है?

उत्तर- 1. हैरी पॉटर एंड द डेथली हैलोज-2 2. नोवाक जोकोविच 3. पंजाब 4. ऑस्ट्रेलिया 5. सेप ब्लैटर 6. पाकिस्तान 7. क्योटो 8. 25 जनवरी 9. हमीदा बानो 10. नागपुर 11. 260 12. एचएसबीसी 13. नागपुर 14. तीन

खर्च करें या जोड़ें ?

अब्दुल रहीम और वसंतराव एक ही नगर के रहने वाले थे। दोनों बचपन से ही एक स्कूल में पढ़े थे। बड़े होने के बाद वे दोनों एक ही कारखाने में काम करने लगे। दोनों की दोस्ती से दूर-दूर तक के लोग वाकिफ थे। एक-दूसरे के सुख में तो दोनों बेहद खुश होते ही थे, लेकिन एक-दूसरे के दुख में साथ देना भी न भूलते। हर चीज तो एक-सी थी। बस एक बात थी जिसमें दोनों की सोच एकदम अलग थी। अब्दुल रहीम पूरब था, तो वसंतराव पश्चिम। एकदम एक-दूसरे से दूर और उल्टे।

अब्दुल खर्चीला था और वसंत देख-भाल कर चलता था। दोनों को कारखाने से एक ही दिन वेतन मिलता था, पर वेतन के रुपए जेब में डालकर अब्दुल दूसरे ही दिन बाजार जाता और अपने शौक की दो-चार चीजें खरीद लाता। वसंत दूसरे ही दिन याद से बैंक जाता और महीनेभर का खर्चा अलग करके बचत के रुपए अपने हिसाब में जमा कर देता। अब्दुल कपड़े तो बढ़िया पहनता ही था, पर अपना घर भी खूब सजाकर रखता था। वसंत सादा खाता, सादा रहता, सादा पहनता। वसंत जब भी अब्दुल के घर आता, वह उसे नई-नई चीजें दिखाता और कहता? 'वसंत बाबू, घर इसका नाम है कि कोई देखे तो उसे हैरानी और खुशी दोनों हो।'

अब्दुल कभी वसंत के घर जाता, तो वह उसकी सादगी की खूब हंसी उड़ाता। इसी सादगी के लिए उसने अपने दोस्त को एक नया नाम भी दे दिया था 'स्वामीजी'। इससे उलट वसंत बेहद सादगी से जवाब देता, 'ठीक है मेरे दोस्त। मैं स्वामीजी ही भला, तू नवाब बना रह, मैं साधु-सा जीवन जीने में ही खुश हूं। फिर भी दोस्ती के नाते मैं तुझे एक ही राय देना चाहूंगा कि आदमी को अपनी आमदनी में से चार पैसे जमा करने चाहिएं। अगर मरने के बाद भी कफन के लिए पड़ोसियों को पैसे इकट्ठा करने पड़े, तो इस जीवन का क्या अर्थ?'

यों ही दोनों की ज़िंदगी के कई साल बीत गए। एक दिन वे नाव में बैठकर कहीं जा रहे थे। नाव में उन दोनों के अलावा और भी कईं मुसाफिर थे। कुछ दूर जाते ही अचानक नाव में छेद हो गया और उस छेद से नाव में पानी भरने लगा। सभी मुसाफिर इस बात का मतलब समझ गए थे कि जल्द ही नाव में सारा पानी भर जाएगा और नाव डूब जाएगी। सबने अपना अंत देख लिया था। इस सबसे अब्दुल तो घबरा गया, लेकिन वसंत ने धीरे से नाविक के कान में कहा? 'तुझे तो तैरना आता ही होगा। अगर तू तैर कर हमें बचा लेगा, तो मैं तुझे दो सौ रुपए इनाम दूंगा।'

नाविक के पास लकड़ी का तख्ता था, उसने अब्दुल और वसंत को उस पर बैठाकर नदी पार करवा दी। पार उतरकर वसंत ने अब्दुल से कहा? 'तू अक्सर मुझे स्वामीजी कहकर चिढ़ाता था न? अगर आज मेरे द्वारा जमा किए रुपए न होते, तो हम भी बाकी सब की तरह डूब कर मर चुके होते।'

थोड़ी देर तो अब्दुल सोचता रहा और फिर हंसते हुए बोला? 'जोड़ने से हम कहां बचे? हम तो पैसे खर्च करके ही बचे हैं। जोड़कर नाविक ने हमें नहीं बचाया, बल्कि खर्च कर नाविक हमें बचाने को राजी हुआ। तू अब भी इस बात को नहीं समझ पा रहा है।' यह कहते ही वह जोर-जोर से हंसने लगा।

हंसना तो उसका स्वभाव था। पर इस कहानी से हमारे हाथ क्या बात लगी? यह बात ठीक है कि जो जमा नहीं करेगा, तो वह खर्च क्या करेगा? और जो समय पड़ने पर खर्च नहीं करेगा, उसे जमा करने से क्या लाभ? आखिर जमा करना बड़ी बात है या खर्च करना? असल में सबसे अहम बात है, समय पर जमा करना भी जानें और समय पर खर्च करना भी। सौ बातों की एक बात यह है कि जीवन का जितना बड़ा दोष फिजूलखर्ची है, उतना ही बड़ा दोष है कंजूसी। भरपूर जीवन जीने की चाह रखने वाले इंसान को इन दोनों ही दोषों से बचना चाहिए।

रंग भरो